ट्रैक्टर-कार भिड़न्त में सात घायल

दो हिस्सों में बंटा ट्रैक्टर, कार भी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त

नवभारत न्यूज

भिण्ड, 18 अप्रैल। जिले के भिण्ड-भाण्डेर मुख्य मार्ग पर शनिवार की सुबह ररी गांव के पास ट्रैक्टर-ट्रॉली और कार की आमने-सामने भीषण भिड़न्त हो गई। जिससे ट्रैक्टर-ट्रॉली में सवार सात लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ट्रैक्टर मौके पर ही दो हिस्सों में टूट गया और ट्रॉली सड़क किनारे पलट गई।

जानकारी के अनुसार भिण्ड जिले के ग्राम परसाला के लोग उत्तर प्रदेश के अर्जुनपुरा (नदीगांव) में आयोजित फलदान समारोह से ट्रैक्टर-ट्रॉली में सवार होकर लौट रहे थे। सुबह करीब 4 बजे मिहोना की तरफ से आ रही एक तेज रफ्तार कार ने ट्रैक्टर को टक्कर मार दी। गनीमत रही कि ट्रॉली सड़क किनारे एक पेड़ से टकराकर रुक गई, जिससे वह पास की खाई में गिरने से बच गई।

इस हादसे में कार का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया, लेकिन एयरबैग खुलने के कारण कार सवार सुरक्षित बच गए। वहीं ट्रैक्टर-ट्रॉली में सवार उमाशंकर बघेल उम्र 40 साल, महेन्द्र सिंह उम्र 41 साल, कल्लू सिंह उम्र 35 साल, रामबाबू बघेल उम्र 30 साल, योगेश उम्र 24 साल, हरेन्द्र उम्र 17 साल और शशिप्रभा देवी उम्र 43 साल निवासी ग्राम परसाला गंभीर रूप से घायल हो गए।

सभी घायलों को तत्काल लहार सिविल अस्पताल भेजा गया है। घटना की सूचना मिलते ही मिहोना थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल पहुंचाया। पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को सड़क से हटाकर जांच शुरू कर दी है।

भिण्ड-ग्वालियर रोड पर भीषण हादसा, एक की मौत, दो बच्चे घायल

इलाज के दौरान एक बच्चे की मौत

गोहद। गोहद चौराहा थाना क्षेत्र अंतर्गत भिण्ड-ग्वालियर रोड पर नायरा पेट्रोल पंप के पास शुक्रवार को रात में दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। तेज रफ्तार कार ने बाइक को टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार एक अज्ञात व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में दो नाबालिग बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर होने पर ग्वालियर रेफर किया गया। इलाज के दौरान एक बच्चे की भी मौत हो गई। घटना के बाद क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। पुलिस द्वारा मृतकों व घायलों की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं।

बदहवास सियार ने युवक पर किया हमला

भिण्ड, 18 अप्रैल। जिले के लहार जनपद के ग्राम गांगेपुरा के लोग जंगली जानवर सियार के आतंक से बुरी तरह से भयभीत हैं। लोगों को गांव के बाहर निकलने पर भय लगने लगा है। सियार ने शनिवार को एक युवक पर हमला बोल दिया, जिससे युवक बुरी तरह से घायल हो गया। जानकारी के अनुसार ग्राम गांगेपुरा निवासी घायल रघुवंशी कुशवाह शनिवार को सुबह करीब 11 बजे गांव के बाहर नाले के पास अपनी बकरियां चरा रहा था। इसी दौरान उनकी बकरियों पर जंगली सियार ने हमला बोल दिया। बकरियों को बचाने के लिए जैसे ही वह दौड़ा तो शियार ने बकरी को छोड़कर उस पर हमला कर दिया। खूंखार सियार ने उसके एक पैर की जांघ में काट लिया, जिससे जांघ में गहरा घाव हो गया और मांस निकल आया है। इसके अलावा एक हाथ की एक उंगली में भी काट लिया। सियार के हमले से रघुवंशी बुरी तरह से घायल हो गया। यहां बता दें कि विदित हो कि इस घटना के पहले भी ग्राम गांगेपुरा में जंगली जानवर सियार गांव में घुसकर दो महिलाओं एवं पालतू पशुओं पर हमला कर चुका है, जिसमें महिला गंभीर रूप से घायल हो गई थी। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन एवं वन विभाग के अधिकारियों से खूंखार जंगली सियार को पकड़वाने की मांग की है।

प्रधान आरक्षक की संदिग्ध मौत

भिण्ड, 18 अप्रैल। भोपाल पुलिस लाइन में पदस्थ एक प्रधान आरक्षक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। वह 14 अप्रैल को छुट्टी लेकर अपने गृह नगर भिण्ड आया था। घटना शहर कोतवाली थाना क्षेत्र के गीता भवन गली की है। जानकारी के अनुसार शुक्रवार-शनिवार की दरम्यानी रात भोपाल पुलिस लाइन में पदस्थ प्रधान आरक्षक उमेश दौहरे उम्र करीब 36 गीता भवन गली स्थित अपनी एक परिचित महिला मित्र के घर गया था। वहीं रहते हुए उसने एक परिचित को फोन कर अपनी तबीयत खराब होने की सूचना दी थी। कुछ देर बाद वह गीता भवन गली में अचेत अवस्था में मिला। सूचना पर 108 एंबुलेंस से उसे जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस के मुताबिक उमेश दौहरे करीब 15 वर्षों से सेवा में था और भोपाल पुलिस लाइन में पदस्थ था। कोतवाली टीआई बृजेन्द्र सिंह सेंगर के अनुसार मामला संदिग्ध प्रतीत हो रहा है। शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया गया है। पीएम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का खुलासा हो सकेगा।

राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा हेतु उड़नदस्ते गठित

भिण्ड, 18 अप्रैल। कलेक्टर किरोड़ी लाल मीणा ने मप्र लोकसेवा आयोग इंदौर द्वारा 26 अप्रैल को दो सत्रों में (प्रथम सत्र 10 से 12 एवं द्वितीय सत्र 2.15 से 4.15 बजे तक) आयोजित होने वाली राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2026 के निर्विघ्न एवं शांतिपूर्ण ढ़ंग से सम्पन्न कराने हेतु उड़न दस्ते का गठन किया है।

जिसमें परीक्षा केन्द्र 24/1 उत्कृष्ट उमावि क्र.एक लश्कर रोड भिण्ड, 24/2 शा. एमजेएस महाविद्यालय भिण्ड, 24/3 एमएलबी गर्ल्स स्कूल वनखण्डेश्वर रोड भिण्ड, 24/4 आईपीएस अकेडमी कीरतपुरा बाई पास रोड भिण्ड, 24/5 पीएमश्री केन्द्रीय विद्यालय भिण्ड, 24/6 जैन कॉलेज वाटर वर्क्स रोड भिण्ड के लिए उड़न दस्ता अधिकारी अपर कलेक्टर भिण्ड एलके पाण्डेय मो. 9893381325, सहायक ग्रेड-3 कलेक्ट्रेट भिण्ड हर्षवर्धन मो. 8878431119, सहायक ग्रेड-3 कलेक्ट्रेट भिण्ड सुशील शर्मा, वीडियो ग्राफर लखन मौर्य मो.9753513357 को नियुक्त किया गया है। यह अधिकारी आवंटित परीक्षा केन्द्रों के समस्त कक्षों की वीडियोग्राफी करेंगे तथा ऐसे स्थानों की भी वीडियोग्राफी की जाए जो परीक्षा प्रणाली सुचारू एवं निर्विघ्न रूप से संपन्न करने के लिए आवश्यक है, किंतु अभ्यर्थी की उत्तर पुस्तिकाओं की वीडियोग्राफी वर्जित रहेगी। उड़नदस्ता के साथ जाने वाले वीडियोग्राफर के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति द्वारा परीक्षा केन्द्रों की वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी वर्जित रहेगी। किसी भी महत्वपूर्ण घटना की जानकारी कंट्रोल रूम के दूरभाष क्र. 07534231200 पर दी जाए।

उड़नदस्ता प्रभारी अधिकारी द्वारा भेजे जाने वाले प्रतिवेदन का प्रारूप आपको दिया गया है जिस पर दोनों सत्रों की परीक्षा केन्द्रवार जानकारी पृथक-पृथक प्रस्तुत की जाए। परीक्षा समाप्ति उपरांत वीडियोग्राफी की पेनड्राइव एवं प्रतिवेदन परीक्षा समाप्ति के तत्काल उपरांत महेन्द्र सिंह सौजन्या डिप्टी कलेक्टर भिण्ड को अनिवार्य रूप से सौंपी जाए। प्रतिवेदन की एक प्रति सामान्य शाखा-2 कलेक्ट्रेट भिण्ड में भी प्रस्तुत की जाए।

सत्यपथ धर्म यात्रा के दूसरे त्रिमूर्ति धाम में प्रवचन

नैतिक मूल्यों, बेटी, गौ, नदी, पेड़ की रक्षा से ही बचेगा समाज

भिण्ड, 18 अप्रैल। अखिल भारतीय संत समिति जिला अध्यक्ष संत कालीदास महाराज ने आज सत्यपथ धर्म यात्रा के दूसरे दिन नाहरा, भदाखुर, भौंनपुरा, देवगढ़, ऊमरी में कई जगह मन्दिर चौपालों पर बैठकर ने प्रवचन दिए।

महाराज ने कहा कि हर व्यक्ति अपने जीवन में एक पेड़ जरूर लगाए तभी मनुष्य जीवन की सार्थकता है। नदियों में गंदगी न डालें, आपसी भाईचारे से रहे, मांसमरी करने वाले सोचें कि तुम्हारी भी मौत होनी है, हत्या किसी भी सूरत में जायज नहीं ठहराई जा सकती। सत्य पथ पद यात्रा में शामिल त्रिमूर्ति धाम पीठाधीश्वर डॉ. शिवप्रताप महाराज ने कहा कि परिवार बचाना है तो बच्चों के हाथ से मोबाइल हटाओ, हर एक इंसान दूसरे इंसान से प्रेम करे, अगर भिण्ड का विकास करना है तो हमें अपने अंदर के मन को सत्य पथ पर चलाना होगा।

आज जब यात्रा देवगढ़ पहुंची तो त्रिमूर्ति धाम पर मौजूद भक्तजनों ने संत समाज का अभूतपूर्व सम्मान किया। यात्रा में रामेश्वर दास महाराज, शांतिदास महाराज, काशीदास महाराज, भिण्डी महाराज, प्रद्युम्न महाराज, समाजसेवी एवं कांग्रेस नेता मनोज देपुरिया, श्रीराम सेना से जीतू भदौरिया जामपुरा, ब्राह्मण समाज अध्यक्ष सतीश जोशी, ओबीसी मोर्चा के प्रदेश सचिव राजेश यादव, गौरव तोमर, परशुराम सेना के देवेश शर्मा, रिशेन्द्र सिंह राजावत, छोटू भदौरिया खड़ेरीपुरा, समाजसेवी रॉकी तोमर सहित कई समाजसेवी ग्रामीणजन शामिल रहे।

विश्व पर्यटक दिवस पर मितावली पर्यटक स्थल का महत्व बताया

नवभारत न्यूज

मालनपुर, 18 अप्रैल। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा मितावली पर्यटक स्थान पर आसपास के सभी भाई बहनों को संदेश दिया गया और विश्व पर्यटक दिवस पर मितावली पर्यटक स्थल का महत्व सभी को बताया गया। मितावली 64 योगिनी मंदिर की यात्रा एक पर्यटक के लिए इतिहास, रहस्य और वास्तुकला का अद्भुत मिश्रण है।

मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में स्थित यह स्थान चंबल की घाटी में छिपी एक अनमोल विरासत है। पहाड़ी पर स्थित रहस्यमयी गोलाकार मंदिर ग्वालियर से लगभग 40-50 किमी की दूरी पर, एक शांत गाँव में 100 फीट ऊँची पहाड़ी पर यह मंदिर बना है। यहाँ पहुँचने के लिए लगभग 100 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। ऊपर पहुँचते ही, चंबल की हरियाली के बीच स्थित यह गोलाकार संरचना पर्यटक को मंत्रमुग्ध कर देती है। वास्तुकला और संसद भवन इस मंदिर का मुख्य आकर्षण इसका गोलाकार डिज़ाइन है। इसमें कुल 64 कमरे हैं, जो योगिनियों को समर्पित थे, और बीच में भगवान शिव का एक मुख्य मंदिर है। सबसे रोचक बात यह है कि यह मंदिर 9वीं सदी (कच्छपघात राजवंश) का है और कहा जाता है कि आधुनिक भारतीय संसद का डिज़ाइन इसी से प्रेरित है। यहाँ कुल 101 स्तंभ हैं, जो संसद के गलियारे की याद दिलाते हैं। तांत्रिक शिक्षा का केंद्र इस मंदिर को 'एकत्तरसो महादेव मंदिर' भी कहा जाता है। मान्यताओं के अनुसार, यहाँ 1000 साल पहले ज्योतिष, गणित और योग की शिक्षा दी जाती थी। यहाँ के हर कक्ष में एक शिवलिंग और योगिनी की प्रतिमा थी, लेकिन अब योगिनियों की मूर्तियां सुरक्षित संग्रहालयों में हैं। बटेश्वर और पड़ावली के साथ 'त्रिकोण'

पर्यटक अक्सर मितावली पड़ावली और बटेश्वर का एक 'गोल्डन ट्रायंगल' सर्किट घूमते हैं। यहाँ की शांति, इतिहास की खामोश गवाह दीवारें, और चंबल के बीहड़ों के पास होने का रोमांच पर्यटकों को एक अलग दुनिया में ले जाता है।

विश्व पर्यटक दिवस पर भारत माता और महादेव एवं ब्रह्माकुमारी संस्थान के भाई बहनों द्वारा विश्व पर्यटक स्थलों को बचाने की प्रतिज्ञा की गई एवं उनको बहुत ही सुंदर रूप देकर पर्यटकों को उत्साहित करने की संकल्प लिए गए। कार्यक्रम में ज्योति बहन, शशि बहन, नेहा बहन, अनामिका, अंजलि,अनु, कशिश, प्रसाद भाई, महेश भाई, सुनील भाई, संतोष भाई उपस्थित थे।

प्रभारी अधिकारी ने परियोजना को बना दिया भ्रष्टाचार का केन्द्र

सीटू ने एसडीम लहार से की शिकायत, सबूत के तौर पर दिया वीडियो

भिण्ड, 18 अप्रैल। महिला वाल विकास परियोजना लहार में व्याप्त भ्रष्टाचार की जांच के लिए सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियंस सीटू जिला महासचिव अनिल दौनेरिया के नेतृत्व में सीटू प्रतिनिधि मण्डल ने 4 सूत्रीय ज्ञापन एवं कुछ वीडियो एसडीएम लहार विजय सिंह यादव को दिए। एसडीएम ने भ्रष्टाचार की गंभीरता को देखते हुए प्रतिनिधि मण्डल का वीडियो बनाकर ज्ञापन लिया। उन्होंने प्रभारी परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग ज्योति तोमर से प्रतिनिधि मण्डल के सामने ही मोबाइल पर चर्चा की।

अकाउंट वेरीफिकेशन एवं ड्रेस के मांगे जा रहे पैसे:

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के बैंक खातों में यूनी फार्म के लिए एक हजार रुपए महिला वाल विकास विभाग भोपाल द्वारा डाले गए हैं, कार्यकर्ता को ड्रेस खरीदना होती है, लेकिन लहार परियोजना अधिकारी दबाब डाल रही है कि वह एक हजार रुपए मुझे दो और ड्रेस खरीकर हम देंगे, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को जनवरी फरवरी का मानदेय मार्च के अंतिम दिनों में आया था, मार्च का मानदेय 18 अप्रैल तक नहीं आया है, इसका कारण बैंक खातों का वेरीफिकेशन बताया गया है, लेकिन यहां कहानी अलग है, खातों के वेरिफिकेशन के लिए आधार कार्ड नियुक्ति पत्र बैंक पासबुक के साथ 500 रुपए की मांग की जा रही है।

एसडीएम ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से पूछा कि तुम्हारे केन्द्रों के संचालन की स्थिति बेहतर होनी चाहिए खाना एवं नाश्ता समय पर मिलना चाहिए, तब शहरी एवं ग्रामीण कार्यकर्ताओं ने एक सुर में बताया कि खाना और नाश्ता महीनों तो छोड़िए वर्षों से नहीं बटा है, शहरी ग्रामीण क्षेत्र में नियुक्त समूह द्वारा बिल्कुल भी खाना एवं नाश्ता नहीं दिया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि महिला बाल विकास की भूमिका कितनी संदिग्ध है। अर्थात सुपर वाईजर एवं प्रभारी सीडीपीओ द्वारा सीधे वसूली अभियान चलाया जा रहा है।

एसडीएम विजय यादव ने प्रतिनिधि मण्डल को बताया कि परियोजना नियम के अनुसार आंगनबाड़ी केन्द्र सुबह 9 बजे से 4 बजे तक खुलना चाहिए, लेकिन परियोजना अधिकारी 4 बजे के बाद आंगनबाड़ी केन्द्रों का निरीक्षण करती हैं और नोटिस का जवाब कार्यकर्ता से कार्यालय की जगह शनिवार, रविवार को घर पर लेती है। एसडीएम वेतन राजसात करने की कार्रवाई प्रभारी परियोजना अधिकारी पर कर चुके हैं। भाजपा का नारा था कि न खाऊंगा और न खाने दूंगा, लेकिन मप्र में भाजपा की सरकार 20 वर्ष से लहार में जिसके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की जाती है, वही सैक्टर सुपर वाइजर से प्रमोशन होकर प्रभारी परियोजना अधिकारी कैसे नियुक्त हो जाता है। इसका अर्थ है कि भाजपा सरकार में लूटो चंदा दो और मोज करो। पूर्व में एसडीएम विजय सिंह यादव द्वारा लगातार आंगनबाड़ियों की निरीक्षण किए गए हैं।

दंदरौआ धाम में विवाह सम्मेलन आज

भिण्ड। दंदरौआ धाम में महामण्डलेश्वर महंत रामदास महाराज के सानिध्य में निव्या बंधन सर्वजातीय शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति द्वारा अगला विवाह सम्मेलन 19 अप्रैल को आयोजन किया जाएगा। समिति द्वारा विवाह पंजीयन किए जा रहे हैं।

यातायात सुविधाओं को बेहतर बनाने, व्यापक स्तर पर मरम्मत एवं संधारण कार्य प्रगति पर

मालनपुर, 18 अप्रैल। मप्र सड़क विकास निगम द्वारा जनसुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए ग्वालियर-भिंड राष्ट्रीय राजमार्ग- 719 पर सड़क सुरक्षा एवं यातायात सुविधाओं को बेहतर बनाने हेतु व्यापक स्तर पर मरम्मत एवं संधारण कार्य संचालित किए जा रहे हैं। जिसके तहत दुर्घटना संभावित स्थलों (ब्लैक स्पॉट्स) का प्राथमिकता के आधार पर सुधार एवं मरम्मत कार्य। सड़क के दोनों ओर शोल्डर्स पर उगी झाड़ियों एवं जंगल की नियमित सफाई, ताकि मार्ग की दृश्यता बढ़े और वाहन चालकों को सुरक्षित आवागमन उपलब्ध हो सके।

रात्रिकालीन यात्रा को अधिक सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से आवश्यक स्थलों पर 'रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप' लगाए जा रहे हैं, जिससे नाइट विजन बेहतर बने और वाहन चालकों को यात्रा के दौरान सड़क की दिशा और किनारों का स्पष्ट संकेत मिल सके। एमपीआरडीसी का उद्देश्य नागरिकों को सुगम, सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा उपलब्ध कराना है। यह कार्य राजेश दायमा डिवीजनल मैनेजर एमपीआरडीसी के मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

परीक्षा संचालन हेतु परीक्षा प्रभारी किया नियुक्त

भिण्ड। राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2026 का आयोजन जिले के 6 परीक्षा केन्द्रों पर 26 अप्रैल को दो सत्रों में किया जा रहा है।

कलेक्टर किरोड़ी लाल मीणा ने परीक्षा संचालन हेतु संयुक्त कलेक्टर शिवांगी अग्रवाल को परीक्षा प्रभारी नियुक्त किया है, इनके साथ आनंद शर्मा डाइट प्राचार्य को सहायक नोडल परीक्षा प्रभारी परीक्षा संचालन हेतु नियुक्त किया है एवं इनके साथ सहयोग हेतु कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है जिसमें सोनल दीक्षित सहायक ग्रेड-3 कलेक्ट्रेट, मोनेश शर्मा सहायक ग्रेड-3 कलेक्ट्रेट, अनीता त्रिपाठी भृत्य कलेक्ट्रेट, मीनाक्षी तिवारी भृत्य कलेक्ट्रेट की ड्यूटी लगाई गई है। उक्त कर्मचारी परीक्षा प्रभारी संयुक्त कलेक्टर शिवांगी अग्रवाल के निर्देशन में कार्य करेंगे।

आम सूचना

श्री सुभाष चंद जैन पुत्र श्री चंद्र सेन जैन के स्वत्व, स्वामित्व व आधिपत्य की अचल सम्पत्ति भवन, स्थित ग्राम गोरमी, तहसील मेहगाँव व जिला भिण्ड (म.प्र.) है जो नगर परिषद गोरमी वार्ड क्र.14 में स्थित है जिसका सम्पत्ति क्र. 7001784263 है एवं जिसका क्षेत्रफल 1336 वर्गफुट है। उक्त सम्पत्ति पूर्व में श्री बतासीलाल पुत्र श्री चतुरीलाल द्वारा सुमन (नाबालिग पुत्री श्री रतनलाल सरपरस्त अंकल श्री संतोषीलाल को रजिस्टर्ड विक्रय विलेख क्र. 218. दिनांक 15.03.1975 से विक्रय की गई। श्रीमती सुमन जैन का स्वर्गवास दिनांक 20.10.1985 को हो जाने के उपरांत, उनके उत्तराधिकारी (पति) श्री सुभाष चंद जैन पुत्र श्री चंद्रसेन जैन उनकी सम्पत्ति के मालिक हुये एवं नगर परिषद गोरमी में अपना नाम इंद्राज कराया गया। श्री सुभाष चंद जैन द्वारा उक्त सम्पत्ति को मेरे पक्षकार वित्तीय संस्थान एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट कम्पनी लिमिटेड ग्वालियर के समक्ष बंधक किया जाकर ऋण प्राप्त किये जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। इस कारण जिस किसी व्यक्ति, फर्म, संस्था, निगम अथवा निकाय एवं श्रीमती सुमन जैन के अन्य उत्तराधिकारियों को उक्त सम्पत्ति को मेरे पक्षकार के पक्ष में बन्धक किये जाने अथवा उक्त सम्पत्ति के स्वत्व, स्वामित्व, एवं आधिपत्य के सम्बन्ध में किसी प्रकार की आपत्ति होने पर एवं अन्य प्रकार के हित निहित होने पर दस्तावेज सहित मेरे कार्यालय में अथवा मेरे पक्षकार के कार्यालय में लिखित आपत्ति मय दस्तावेज इस सूचना प्रकाशन के 03 दिवस के भीतर प्रस्तुत करें। उक्त अवधि के समाप्त होते ही उपरोक्त वर्णित अचल सम्पत्ति मेरे पक्षकार के पक्ष में बंधक की जाकर ऋण प्रदान करने की कार्यवाही की जावेगी। तत्पश्चात हर प्रकार की आपत्ति प्रभावहीन होकर शून्य होगी। कृपया सूचित हो।

प्रेषक- **नीरज जैन** (एडवोकेट)
कार्या.-भवन क्र. 52, कैलाश विहार,
फैडरल बैंक के पास, सिटी सेन्टर,
ग्वालियर, मो. 98276-72710

नारी शक्ति और लोकतंत्र के प्रति वंदन का एक बड़ा अवसर छूट गया

भारत में प्राचीन काल से लेकर अब तक की शासन प्रणालियों में संवाद, आम सहमति और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति विशेष आग्रह रहा है। भारत को 'लोकतंत्र की जननी' संभवतः इसलिए नहीं कहा जाता कि ऋग्वेद /अथर्ववेद जैसे प्राचीन ग्रंथो में सभा व समिति जैसी निर्णय प्रणाली का उल्लेख मिलता है या प्राचीन गण राज्यों के 'मुंडिया दरबार' जैसी स्वशासन प्रणालियों के निर्णय भी सर्वसम्मति से ही होते थे अपितु इससे भी आगे बढ़कर इन सभी प्रणालियों में मातृशक्ति की बढ़ चढ़कर और एक सशक्त भूमिका रहती थी। परिवार व्यवस्था जो कि भारतीय सामाजिक जीवन की धुरी मानी जाती है मातृशक्ति के बिना इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती और आज देखिए कैसा समय आ गया है कि हमारे समाज में ही स्वयं शक्तिस्वरूपा नारी के सशक्तिकरण और सहभागिता की गुहार संसदीय व्यवस्था के समक्ष लगी हुई है।

मानव जाति के प्रारंभिक काल से लेकर कई प्रकार की शासन प्रणालियां कई राष्ट्रों में रही होगी किंतु आज जिसे हम 'डेमोक्रेसी' कह रहे हैं वह अपनी स्वीकार्यता, सहभागिता और संवेदनशीलता के कारण ही प्रचलन में आई है। अब तो डेमोक्रेसी को शासन व्यवस्था के रूप में ही नहीं अपितु जीवन दर्शन के रूप में देखा जा रहा है। विश्व के अधिकांश देश स्वयं को लोकतंत्र होने में गौरव पाते हैं और दूसरे पर आरोप लगाना हो तो उसे 'लोकतंत्र का शत्रु' कहकर कटघरे में खड़ा करने का प्रयास करते हैं। यही राजनीतिक दलों के साथ भी है। आज लोकतंत्र के सिपहसालार कहे जाने वाले राष्ट्र भी अपने संबोधनों में बड़ा ज्ञान प्रसारित करते हैं किंतु संपूर्ण विश्व साक्षी है कि वहां नारी शक्ति को बड़े संघर्षों के बाद में मताधिकार का प्रयोग करने दिया गया। स्पेन 1931, यूके 1928, फ्रांस 1944, स्विट्जरलैंड 1971 तक अपने देश की महिलाओं को मताधिकार दे पाते हैं। भारत को अंग्रेजों से स्वाधीनता प्राप्त हुई और भारतीय संविधान निर्माण होते ही समान अधिकार के अंतर्गत सभी को मताधिकार का प्रयोग करने दिया। लोकतंत्र कई राष्ट्रों के लिए शासन प्रणाली हो सकती है किंतु भारत के लिए यह जीवन मूल्य है जिसकी झलक उसकी सांस्कृतिक विरासत के हर पक्ष में दिखती है। हमारी डेमोक्रेसी 'बहुमत' से आगे जाकर 'सर्वसम्मति' के आधार पर चलती है।

आज हमारे पास जो संविधान प्रदत्त संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली है उसका बहुत कुछ अंश भारत सरकार अधिनियम 1935 से लिया गया इसलिए शासन प्रणाली में कई सारे प्रावधानों पर उसका सीधी छाप होना स्वाभाविक है। समयानुसार कई संशोधन भी हुए और कई भविष्य में होंगे किन्तु भारतीय जीवन मूल्य प्रदत वेद वाक्यों को हम भूले नहीं। आधुनिक लोकतंत्र के व्याख्याकार भारतीय परिप्रेक्ष्य में नारी शक्ति के महत्व का मूल्यांकन नहीं कर पाए और पाश्चात्य डेमोक्रेटिक व्यवस्था से तुलना करते रहे। जिस राष्ट्र में 'यत्र नारस्य पूज्यन्ते', समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ', माताभूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:' (अथर्ववेद) जैसे वेदवाक्य प्रातः काल से ही उच्चरित होते हैं उसकी नारी सशक्तिकरण की कल्पना कितनी ऊंची होगी। यह वह भूमि है जहां आदि शंकराचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित होने वाले मंडन मिश्र की धर्मपत्नी उभय भारती जब सामने आ जाती हैं तो शंकराचार्य जी को भी सांसारिक जीवन का ज्ञान प्रदान कर देती हैं वहीं स्वामी विवेकानंद की माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवी बाल्यकाल में नरेंद्र को कहती हैं कि तुम घुड़सवार तो बनना चाहते हो किंतु बन सको तो भगवान श्री कृष्ण के समान रथ को नियंत्रित करने वाले 'महारथी' बनना। छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रेरणा बनने वाली उनकी माता जीजाबाई हीं थी। एक परिवार को संस्कारित और सुसभ्य बनाने वाली मां ही होती है। ऐसे कई परिवारों से समाज और समाज से राष्ट्र बनता है। इसमें कहीं कोई अतिशयोक्ति नहीं कि राष्ट्र को बनाने वाली भी मां होती है इसलिए कहा गया है 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी '। यही भारत का लोकतंत्र है और यही भारत की लोक शक्ति है जो मातृवंदना पर आश्रित है।

भारत भूमि पर कई ऐसे दृष्टांत हैं जहां लोक कल्याणकारी राजव्यवस्था को मातृशक्ति ने शिखर तक पहुंचाया। आज देशभर में चारों ओर जब 131 वे संविधान संशोधन अधिनियम की चर्चा हो रही है तो ऐसे कई प्रसंग स्मरण हो रहे हैं। पिछले एक दशक से तो मातृशक्ति ने चिकित्सा सेवा, विज्ञान, स्वसहायता समूह, पंचायती राज, स्टार्टअप, बैंकिंग के क्षेत्र में उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किए हैं और जो आंकड़ों में दिख भी रहे हैं किंतु राजनीति के क्षेत्र में सहभागिता अपेक्षाकृत कम है। राजनीति के क्षेत्र का महत्व अन्य क्षेत्रों से कहीं कम नहीं लेकिन निर्णय लेने वाला सबसे बड़ा मंच नीति निर्माण का ही होता है। रानी रुद्रमादेवी, प्रभावती गुप्त, रानी दिद्दा, रानी अवक्का कर्नाटक, रानी अहिल्याबाई होल्कर, रानी चेन्नम्मा मैसूर जैसी कुशल शासिकाओं ने अपनी राजव्यवस्था में लोकतांत्रिक प्रणाली के माध्यम से सुशासन स्थापित किया। इसमें भी कोई अतिशयोक्ति नहीं कि जहां भी मातृशक्ति निर्णय में भागीदार होती है वहां निर्णय अधिक संतुलित, व्यापक, सृजनशील, सर्वसमावेशी और संवेदनशील भी बनते हैं। ऐसे प्रशासकों के साथ ही लोपामुद्रा, मैत्रेयी, अपाला, घोषा,गार्गी ,सुलभा, अरुंधति जैसी शास्त्रार्थ की कला में निपुण विदुषी और विचारक महिलाएं भी हुई जिन्होंने तत्कालीन समाज को अपने अमूल्य विचारों से लाभान्वित किया।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम शासन की शैली में बदलाव के साथ-साथ नारियों को 'याचक' से 'निर्णायक' बनाने की दूरदृष्टि से लाया गया। 1998 से लेकर 2003 के बीच संसद के पटल पर आम सहमति के अभाव में यह प्रयास असफल हुआ यह तो पूर्व की बात रही किंतु परिसीमन की बहस का आधार लेकर 54 वोट से गिर जाने के कारण हम एक और अवसर चूक गए। वैसे तो कई बार संसद में मूल विषय से भटककर या यूं कहें भटकाकर बिल प्रस्ताव खारिज किए जाते रहे हैं। इसमें दलों की अपनी राजनीति भी होती है किंतु यह विषय राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रनीति का था। बिल की सफलता पर न केवल दक्षिण एशिया बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए भी एक मिसाल हमारी संसद के नेतृत्व में पेश होती। हम कोई उत्कृष्ट कार्य करते हैं तो दूसरों के लिए भी सीख बनते हैं इस दृष्टि से संसद ने भी सामूहिक रूप से एक अवसर गवा दिया।

यह बात सत्य है कि आगामी दशक भारत की राजनीति में नारी सशक्तिकरण के साथ-साथ लोकतंत्र के सशक्तिकरण का नया अध्याय लाएगा। जिस प्रकार पंचायत और नगर पालिकाओं में महिलाओं के बढ़े हुए प्रतिनिधित्व के कारण राजनीतिक जागृति के साथ-साथ समाज जागृति आई है उसी प्रकार 543 सीटों के पुराने ढांचे से आगे आकर 850 सीटों का प्रावधान होता तो हम ऐसी कई प्रतिभाओं को अवसर दे पाते। मध्य प्रदेश के संदर्भ में ही देखेंगे तो 29 लोकसभा से बढ़कर 43 लोकसभा सीटे और 230 विधानसभा सीट से बढ़कर 345 सीटे हो जातीं जिसमें 114 विधानसभा की सीटें माता बहनों के लिए आरक्षित हो जातीं। कुछ लोगों के हर बात के लिए अपने ही तर्क होते हैं संभवतः उन्हें संतुष्ट कर पाना संभव नहीं होता किंतु जब कोई यह विचार व्यक्त करे कि राजनीति के क्षेत्र विशेषकर संसद और विधानसभा में जाकर ही महिलाओं का सशक्तिकरण संभव है या इस महिला आरक्षण को जल्दी क्यों करना चाहिए? यह प्रश्न मंशा पर ही संदेह उत्पन्न करता है।

वैसे तो हमारा समाज बहुत से संदर्भों से अपरिचित है और पीछे के इतिहास में महत्वपूर्ण संदर्भ भूल जाने के कारण नागरिक समाज अपनी भूमिका का निर्वहन नहीं कर पाता। हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि 1952 की लोकसभा में लगभग 4 महिलाएं ही थी और 2024 तक यह आंकड़ा 13 प्रतिशत तक आ पाया है। दुनिया के अन्य देशों से तुलना करें तो मेक्सिको 50 प्रतिशत, न्यूजीलैंड 49 प्रतिशत, स्वीडन 46 प्रतिशत है। अमेरिकी सीनेट में 100 में से 26 महिलाएं हैं तो दक्षिण अफ्रीका में पूरी कैबिनेट की 50 प्रतिशत महिलाएं हैं जो की दुनिया का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। और तो और रूस के दोनों सदनों में औसतन 17 प्रतिशत महिलाएं हैं जो कि हमसे ऊपर है। चीन जहां संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली है ही नहीं लेकिन उनकी एनपीसी में 26 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी होती है। इन आंकड़ों को देखकर हमारे देश के राजनीतिक दलों और उनके नेतृत्व को कुछ विचार करना पड़ेगा। इसके साथ ही देश के नागरिक समाज और पढ़े-लिखे लोगों को भी गंभीर विचार करना पड़ेगा।

हमारे देश की लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करने वाले इस निर्णय को आत्मसात करने से हम भले ही चूक गए किंतु कब तक हम यह भूल करते रहेंगे इस विचार को भी चर्चा में लाना होगा। एक तरफ तो राज्यों के बीच का परिसीमन 1971 से ही रुका रहा। जब 2026 तक स्थगन की समय सीमा आएगी तब परिस्थितियों के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। आगे कुछ भी हो किंतु शुभ कार्य शीघ्रता से ही हो तो अच्छा होता है और शुभ भी माना जाता है। यह शुभ कार्य देर से ही सही किंतु होता तो किसी का नुकसान नहीं था बल्कि लाभ ही लाभ था सबकी विजय ही विजय थी।

(डॉ हरिशंकर सिंह कंसाना, भारतीय राजनीतिक चिंतन के जानकार, राजनीति विज्ञान के सहा. प्रोफेसर)